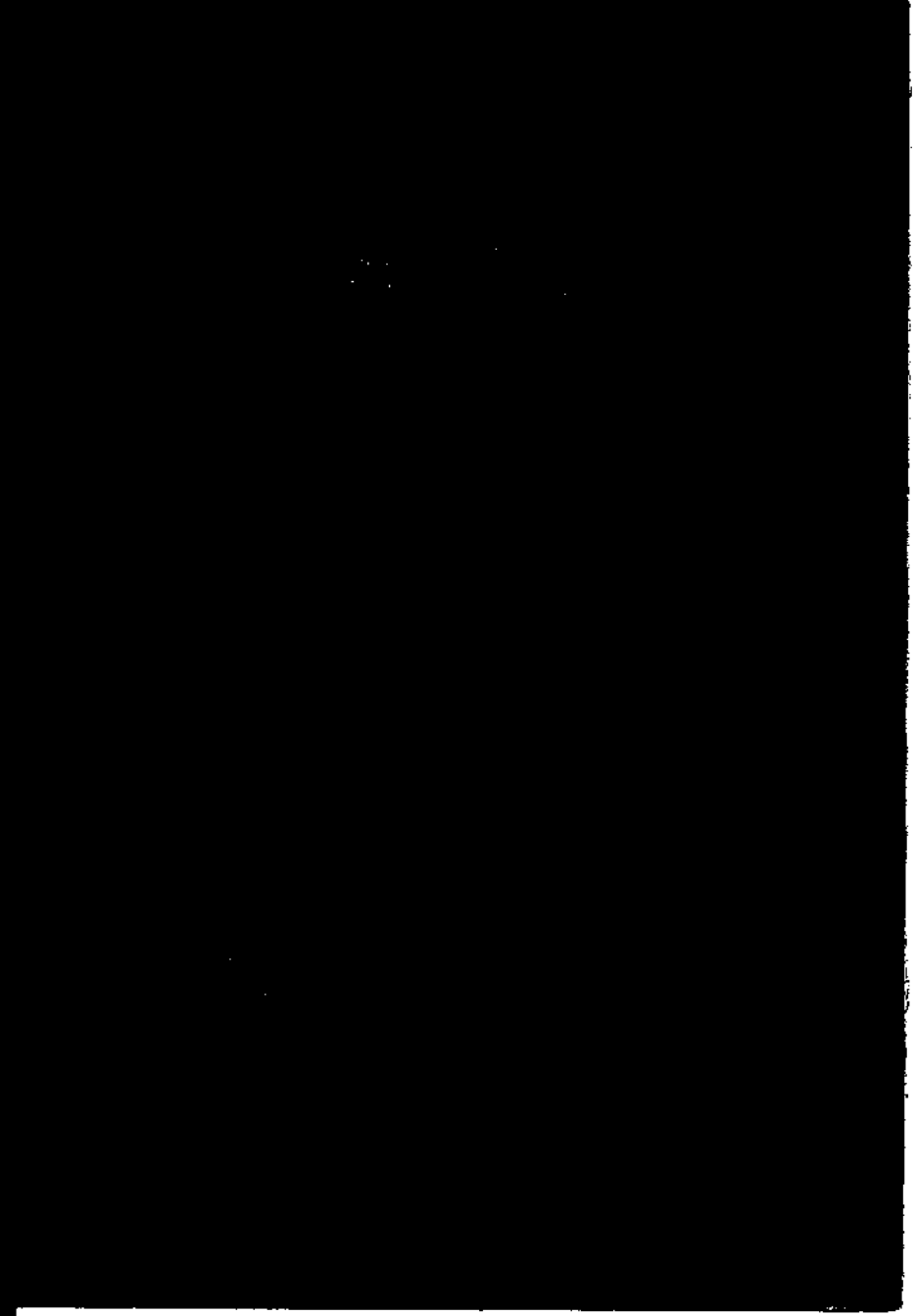

बुद्धिमान गधा

लक्ष्मीनारायण लाल

त्रिमूर्ति प्रकाशन

१९७६
©
लक्ष्मीनारायण लाल
नई दिल्ली

मूल्य : ४ रुपये

प्रकाशक
त्रिमूर्ति प्रकाशन
१८ बी, पश्चिमी निज़ामुद्दीन
नई दिल्ली-११००१३

मुद्रक
मॉडर्न प्रिंटर्स
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

पात्र

धोबी	पहला चोर
धोबिन	दूसरा चोर
देवता	बच्चे
सिपाही	अन्य धोबी
गधा	पड़ौसी

पहला दृश्य

(मंच पर कुछ झाड़ी और एक पेड़ का दृश्य है। इस दृश्य पर प्रकाश आते ही एक विशेष संगीत बजने लगता है। पृष्ठभूमि से सहसा गधे के रेंकने की आवाज़ आती है, और संगीत धीमे-धीमे खो जाता है। गधे की पीठ पर कपड़ा लादे धोबी का प्रवेश।)

धोबी : (गा रहा है।)

मीठी मीठी रोटिया बनाइव बरेठिन
कि भिनहीं चलैक बाय, घाट रामा हो
भिनहीं चलैक बाय, घाट रामा हो।
गदहा बेचारा बड़ा संतोसी, बड़ा संतोसी
काज करै पर बोले ना बात, रामा हो
भिनहीं चलैक बाय घाट, रामा हो।

(गधा रेंकने लगता है।)

धोबी : बस, बस, बस, भाई बस ! पहुँच गये घाट। अब करो बेटा यहाँ मौज। मैं गट्ठर उतार लेता हूँ। अयं, अब इधर-उधर क्या देख रहा है ? देख ई सब जंगल है। (दर्शकों की ओर संकेत कर)

पेड़-पौधे जमे बैठे हैं। इनसे डरता क्यों है ? सब अपने ही हैं। ले भाई, इस पेड़ से तुझे बाँध देता हूँ। (रस्सी से बाँधता है।) बस, इत्ती दूरी में मजे से चर घास। मैं तब तक घाट पर कपड़े धोता हूँ। ठीक है ना ? राम राम। हे छीह, हे छी: !

(कपड़े का गट्ठर उठाये जाता है। गधा इधर-उधर देखता है। घास चरने की कोशिश करता है। रेंकने लगता है। पेड़ के पीछे से देवता का प्रवेश।)

देवता : हाय बेचारा, कितना मजबूर है ! भूखा-प्यासा! किसी से अपना दुख-सुख कह भी नहीं सकता। हाँ, भाई, मैं इस जंगल का देवता हूँ। कितने दिनों से तेरे दुख को देख रहा हूँ ! भाई, डरो नहीं, डरो नहीं। तेरे संतोष से मैं बहुत खुश हूँ। बोल, चाहे जो वरदान तू मुझसे माँग–मैं तुझे वही देता हूँ। ओहो, तू बोल भी तो नहीं सकता। अच्छा, तो पहला वरदान तुझे यही देता हूँ कि तू बोलने लगे। (पानी छिड़ककर) चल बोल भाई, बोल। अपनी ज़बान खोल।

(गधा हँसने लगता है।)

देवता : शाबाश ! अब बोल। माँग ले मनचाहा वरदान !

गधा : देवता, मुझे बुद्धि दे दो।

देवता : ले बुद्धि। ले (पानी छिड़कता है।) ले बुद्धि।

गधा : मेरा फंदा खोल दो।

देवता : ले, तू अब मुक्त है।

(गधा भागता है।)

देवता : अब तुझे कुछ नहीं माँगना ? सोच-विचार ले। अरे, ज़रा सोच तो सही। बस, तुझे सब कुछ मिल गया ? अरे, ज़रा रुककर सोच भी ले।

(गधा भागता रहता है। बहुत प्रसन्न है।)

देवता : सुन.....सुन भाई.....ज़रा सुन तो सही।

गधा : धन्यवाद।

देवता : तू खुश है ? मैं जाऊँ अब ?

गधा : धन्यवाद।

देवता : मैं जाता हूँ। जाता हूँ.....।

(देवता अदृश्य होता है। गधा खुशी से वहाँ चौकड़ी मारकर उछल-कूद रहा है। मजे से घास चर रहा है। रेंकता है। धोबी दौड़ा आता है। गधा वहाँ नहीं है।)

धोबी : (रस्सी देखता है।) अरे मेरा गधा कहाँ गया ? यह फंदा कैसे खुला ? ज़रूर इधर कोई शैतान लड़का आया होगा। उसी ने की होगी शरारत।

(ढूँढ़ता है।) हाय, कहाँ गया मेरा गधा ?..... ओ भाई, कहीं मेरा गधा देखा है ? सच, मैं उसे इसी पेड़ से बाँधकर गया था।.....यह बात नहीं कि मैंने उसके गले में कमजोर फंदा बाँधा था। देखो न, फंदा किसी ने खोला है। यह कैसे हो सकता है.....गधा खुद अपने गले की रस्सी इस तरह खोल ले ! जनाब, ऐसा नहीं हो सकता। (सहसा) हाँ, एक भूल मुझसे जरूर हो गयी थी। मुझे उसके लिए अफ़सोस है। गधे को कुछ खिलाना-पिलाना भूल गया था। मगर ऐसी भी क्या बात.....ऐसा तो अकसर होता ही था। भला, गधा इस बात से क्यों इतना नाराज़ हो जाय कि वह रस्सी ही खुलाकर चम्पत हो जाय। ना.....ना, ना.....ना.....जरूर कुछ दाल में काला है। या तो किसी लड़के की शरारत है या किसी चोर की.....। बाबा रे, चोर की याद आते ही मेरे हाथ-पाँव फूल जाते हैं ? हाँ जी, बिलकुल। एक गधा हाथ से गवाँ बैठा हूँ। अजी, आप लोग नहीं जानते। इन गधों को आप नहीं जानते.....इन्हें तो बस कोई हाँक ले जाय। अब भला मैं उसे कहाँ ढूँढू ? यह जंगल भी तो अजीब है। हाँ, याद आया, उसे आवाज़ देता हूँ।

('ए ऊ...ए ऊ...ए ऊ' की आवाज़ देता है।)

धोबी : अब बताओ क्या करूँ ?.....इस आवाज़ पर तो वह जरूर रेंक पड़ता था।.....हाँ.....हाँ, एक आवाज़ और है—याद आया। जब मैंने इसे गजाधरी के मेले में खरीदा था न, तब इसके मालिक ने बताया था.....

('धे धे धे ऊँ'.....'धे धे धे ऊँ' की आवाज़ लगाता है। दूर से गधे का रेंकना सुनाई पड़ता है।)

धोबी : (खुश) ये मारा ! देखा.....मेरा गधा कितना समझदार है ! अब मैं उसे दूसरी आवाज़ लगाता हूँ.....देखना, वह दौड़ा हुआ आता है मेरे पास..... हाँ जी, ऐसा प्यारा गधा है मेरा.....चाहे जितना उसे मारो.....चाहे जितना उसकी पीठ पर लादो.....हाँ, हाँ, चाहे जो कुछ करो, गधा तो धरम का अवतार है जी.....। देखिये, अब मैं उसे बुलाता हूँ अपने पास।

('इआह.....इआह...' की पुकार)

धोबी : (साश्चर्य) अरे, वह अब तक नहीं आया। माजरा क्या है ? जरूर किसी ने उसे पकड़ रखा है.....रस्सी बाँध रखी है उसके पैरों में। जी हाँ, वरना ऐसा हो नहीं सकता। देखता हूँ।

(बढ़ता है—सहसा रुकता है।)

धोबी : वाह बेटा, तू आकर यहाँ खड़ा है चुपचाप..... और मैं यहाँ बके जा रिआ हूँ।.....बदमाश..... शैतान.....आ, अभी मैं तेरी खबर लेता हूँ।

(डंडा उठाकर हवा में तानता है। गधा आकर हँस पड़ता है। धोबी घबड़ा जाता है। हाथ से डंडा गिर जाता है।)

धोबी : नहीं, नहीं, ऐसा नहीं हो सकता.....नहीं, नहीं!

(गधा फिर हँसता है।)

धोबी : हे भगवान!.....यह मेरा वही गधा है? या जंगल का कोई भूत है? किसी ने कभी गधे को हँसते सुना है? भला, कोई समझाये मुझे।

गधा : मालिक, मैं वही गधा हूँ।

(धोबी भयभीत होता है।)

धोबी : बचाओ.....बचाओ.....मैं कोई सपना तो नहीं देख रिआ हूँ? नहीं, नहीं.....मैं जगा हूँ.....दिन का वक्त है। मैं कपड़े धोने आया हूँ।

गधा : (कपड़ा पटकने का अभिनय)

ऐच्छी.....हे राम
ऐच्छी.....हे राम
ऐच्छी.....सियाराम
ऐच्छी.....सियाराम!

(धोबी घबड़ा कर एक ओर छिप गया है।)

गधा : मालिक, डरो नहीं!

धोबी : (डरा हुआ) हाथ जोड़ता हूँ भाई, सच-सच बता तू कौन है?

गधा : वही तुम्हारा दास हूँ, स्वामी!

धोबी : तू इस तरह बोलने कैसे लगा?

गधा : बात यह हुई, मैं यहाँ पेड़ से बँधा रेंक रहा था। इस पेड़ के पीछे से जंगल का एक देवता आया। उसने मेरे ऊपर पानी छिड़ककर कहा—'बोल, मनुष्य की तरह बोल।'

धोबी : तुझे इसकी क्या जरूरत थी?

गधा : ना बोल पाना ही सबसे बड़ा दुख है।

धोबी : तो तू दुखी था? मुझे बताता।

गधा : कैसे बता सकता था? उसी के लिए तो देवता ने मुझे वाणी दी।

धोबी : अच्छा.....फिर?

गधा : फिर देवता ने मुझे बुद्धि का वरदान दिया।

धोबी : तो तू बुद्धिमान भी हो गया?

गधा : हाँ, स्वामी!

धोबी : यह तो गजब हुआ.....अब तू काम कैसे करेगा?

गधा : अब और अच्छा काम करूँगा? तुम्हारी और भी मदद करूँगा। तुम जो-जो पूछोगे, सलाह माँगोगे, तुरत दूँगा।

धोबी : अच्छा.....यह तो मेरी किस्मत जाग गयी। बता, मेरा नाम क्या है?

गधा : रामगुलाम।

धोबी : मैं गरीब क्यों हूँ।

गधा : क्योंकि तू आलसी है। हर वक्त किस्मत पर विश्वास करता है।

धोबी : अब मैं क्या करूँ कि धनवान हो जाऊँ, पैसे वाला.....इज्ज़तवाला।

गधा : खूब काम करो। अच्छा काम करो। धुलाई की दुकान खोलो....और नौकर रखो।

धोबी : (खुश) वाह ! वाह ! रामगुलाम....जग गयी किस्मत, जग गयी (सहसा) पर इसके लिए धन की पूँजी कहाँ से आयेगी ? मतलब माल कहाँ से ? चाँदी....ठनाठन.....रुपये ?

गधा : मुझे बेच दो.....बहुत बड़ी कीमत मिलेगी..... रुपये ही रुपये....।

धोबी : (और खुश) वाह, वाह.....मार दिया.....मार दिया ! (सहसा) मगर तुझको बेच दूँ ? ऐसा नहीं हो सकता.....भगवान ने तुझे मेरे पास भेजा है.....मेरी किस्मत बनाकर। तुझे बेच दूँ तो.....नहीं, नहीं, कोई और उपाय बता।

गधा : मैं तेरे लिए रुपये कमा सकता हूँ।

धोबी : बता.....बता.....वह कैसे ?

(धोबी गधे का बदन कपड़े से झाड़ना-पोंछना शुरू करता है। उसे प्यार करता है।)

गधा : मैं लोगों को सलाह दे सकता हूँ.....पाँच रुपये में एक सलाह।

धोबी : वाह-वाह ! वाह-वाह !

(गधे का पैर दबाने लगता है।)

गधा : अब घर चलो। मुझे बहुत भूख लगी है।

धोबी : चल....चल, चल, फौरन चल....। तुझे पूरी-कचौरी, मिठाई सब खिलाऊँगा.....पलंग पर सुलाऊँगा तुझे.....। चल प्यारे भाई। (सहसा) और यह कपड़ों का गट्ठर ?

गधा : इसे तुम अपनी पीठ पर लाद लो।

धोबी : वाह, वाह ! बहुत ठीक.....बहुत ठीक ! (लाद लेता है।) यही मैं कहता था न, फिर तू अपना काम कैसे करेगा ?

गधा : उसके लिए तुम अब और गधे खरीद लो।

धोबी : वाह....वाह ! क्यों नहीं....क्यों नहीं ? (चलते हुए) समझ ले भाई, तब तक मैं ही गधा हूँ।

(गधा हँसता है।)

धोबी : हाय ! कितना अच्छा हँसता है तू। और जब तू बोलता है न, तो जैसे फूल बरसने लगते हैं। वाह....वाह ! कैसी अच्छी चाल चलता है तू ! जैसे कोई राजा चलता हो। वाह.....वाह !

(दोनों चलते हैं। कुछ बच्चे दौड़े आते हैं।)

एक बच्चा : सुना है, तुम्हारा गधा अब बोलता है ?

गधा : हाँ जी, जी हाँ। हाँ जी, जी हाँ।

दूसरा बच्चा : हँसता भी है ?

गधा : (हँसता है।)

धोबी : समझो, मैं हूँ अब गधा, वह है धोबी।

गधा : कभी गाड़ी नाव पर.....कभी नाव गाड़ी पर।

(सब बच्चे हँसते हैं।)

तीसरा बच्चा : यह गाता है ?

धोबी : गा सकता है।

गधा : धोबी को पैसे दो, तो गा दूँगा, हाँ।

बच्चे : (देते हैं।) लो भाई लो....अब गाओ।

गधा : (गाता है।)

क का कि की के कै को
ख खा खि खी खे खै खो।
ग गा गि गी गे गै गो
घ घा घि घी घे घै घो।

(गधे के साथ सब गाते हुए जाते हैं। प्रकाश बुझता है।)

दूसरा दृश्य

(धोबी का दरवाज़ा। गधा पलंग पर लेटा है। धोबी पैर दबा रहा है। धोबिन खड़ी पंखा झल रही है। बच्चे आते हैं।)

धोबी : ओ बच्चे, जाओ.....जाओ। भाग जाओ। देखते नहीं, मेरा ज्ञानपरकाश आराम कर रिआ है ?

पहला बच्चा : ओ हो.....गधे का नाम ज्ञानपरकाश !

दूसरा बच्चा : आय.....हाय.....गधाराम पलंग पर !

धोबिन : ऐअ.....का परै परै करि रहो ? भागि जाओ, हाँ।

तीसरा बच्चा : हम लोग चुपचाप यहाँ दूर बैठे रहेंगे, हाँ।

धोबी : नाहीं.....नाहीं, भाग जाओ यहाँ से। यहाँ बच्चों से क्या मतलब ? जाओ.....जाते हो कि नहीं ?

चौथा बच्चा : हमें गधे की बातें अच्छी लगती हैं।

पहला बच्चा : गधा हमारा दोस्त है।

दूसरा बच्चा : हमें कहानियाँ सुनाता है।

तीसरा बच्चा : गाना गाता है।

धोबिन : अच्छा कलि सुबह आना । इस वखत जाव ।

धोबी : मान जावो,.....बेटा ज्ञानपरकाश इस बखत सोइ रहा है ।

(बच्चे जाते हैं। थोड़ी ही देर बाद कुछ पड़ोसी लोग आते हैं।) सब लोग धोबी से 'राम राम', 'जैराम जी की' कहते हैं।)

धोबी : आओ.....भाई.....बैठो । बैठो । (सब बैठते हैं।) ज्ञानपरकाश थोड़ा थक गया है ।

एक : हाँ हाँ, क्यों नहीं, क्यों नहीं ? बड़ा दिमागी काम भी तो करता है ।

दूसरा : एक मामला समझनो है ज्ञानपरकाश से। (देता है) यह लो पाँच रुपये फीस । बात जे है की, एक आदमी ने मेरा दो बीघे खेत जबरदस्ती जोत लिया है—सो मैं क्या करूँ ?

गधा : (उठ बैठता है।) कुछ कागज-पत्तर है ?

दूसरा : यह है न । (देता है) मैं मालिक हूँ खेत का ।

गधा : (कागज़ पढ़कर) यह लो, लिख दिया है मैंने—उस पर मुकदमा चलाओ ।

दूसरा : मुकदमा लड़ने का इतना धन नहीं है मेरे पास ।

गधा : तुम्हारे घर के आँगन में कुछ धन गड़ा रखा है। उसे खोद लो....पाँच हाथ गहरे में है ।

(दूसरा मारे खुशी के भागता है।)

पहला : यह लो फीस (देता है)। मेरा मामला जे है कि मेरे पेट में सुबह-शाम दरद रहता है। कुछ काम नहीं कर पाता।

गधा : (लिखकर देता है।) यह लो....यही दवा खरीद कर सुबह-शाम-दोपहर एक हफ्ते तक खा लेना।

(दूसरी ओर से राजा साहब का सिपाही आता है।)

धोबी : सलाम साहेब, का हुकुम महाराज ?..... बैठिये....।

सिपाही : सुन लो। राजा तुम्हारे गधे को खरीदना चाहते हैं।

(सब एक-दूसरे को देखने लगते हैं।)

धोबिन : हम अपने ज्ञानपरकाश को ना बेचेंगे, हाँ....चाहे जो हो।

सिपाही : राजा इसे अपने दरबार में रखना चाहते हैं।

धोबी : हम उनकी परजा हैं....मुला हम अपने ज्ञान-परकाश को अपने से दूर कैसे करेंगे ?

सिपाही : अरे, सुन ! तुझे मुँहमाँगा दाम मिलेगा।

धोबिन : ना ना ! हमें ना चाही मुँहमाँगा दाम।

धोबी : बताओ भाई, राजा साहब कितना दाम देंगे ?

सिपाही : जो दाम लगा तू।

(सन्नाटा। एक-दूसरे को देखते हैं।)

धोबी : अच्छा, मैं अपने ज्ञानपरकाश से सलाह तो कर लूँ। आखिर यह क्या कहता है। समझदारी की बात वही तो आखिर बतायेगा....चल इधर आ, बेटा ज्ञानू ! आ....! थक गया है।

(चलकर एक किनारे जाते हैं। परामर्श करते हैं।)

धोबी : मेरा ज्ञानू बेटा कहता है—हमें इस पर विचार करने का तीन दिन का मौका दो।.....कितना सही कहता है !

सिपाही : अच्छा, तो तीन दिन याद रखना। चौथे दिन, ठीक इसी वक्त मैं आऊँगा।

धोबी : सलाम साहब !

(सिपाही जाता है।)

धोबी : अब बताओ—कहाँ छिपाऊँ अपने ज्ञानपरकाश को ? सबकी नजर है इसी पर...राजा से परजा तक, सबकी नजर। क्या मुसीबत है ! आज के जमाने में अच्छी चीज हाथ लगना भी गुनाह है।

तीसरा : चोरों से सावधान रहियो, चौधरी !

चौथा : हाँ भइया, बड़ा खराब है जमाना !

धोबिन : मैं तो कहती हूँ—ज्ञानू बेटे को तालाबंद कमरे में रखो, मुला यह मानते नहीं।

धोबी : जे सुनो इसकी। अरे बुद्धिमान कित्ता हो....है तो यह जानवर ही न। दम घुटकर कमरे में

मर ना जायेगा ?

धोबिन : मति बोलो असुभ भाखा, हाँ ।

धोबी : क्यों भइया, आप ही लोग बताओ.....जानवर को कहीं ताले में बंद रखा जाता है ? अरे जानवर को चाहिए खुला मैदान.....हाँ नहीं तो क्या ?

पहला : हाँ भइया, है तो आखिर गधा ही न !

धोबी : अरे सुनो भइया सुनो.....मेरे ज्ञानपरकाश की कई शादियाँ आयी हैं—अब बताओ ।

धोबिन : हाँ, हाँ, मैं तो अपने बेटे के लिए बहू लाऊँगी ।

चौथा : दहेज भी मिलेगा ।

धोबी : अरे लोग इसे घरजमाई बनाना चाहते हैं ।

धोबिन : चाहन दो लोगन को ।

तीसरा : अरे बारात लेकर चलेंगे, चौधरी !

(इस बीच गधा ज़मीन पर ही खड़ा रह गया है ।)

धोबी : बस भाई बस, अब ज्ञानपरकाश का सोने का वक्त हो गया है । यह बात है—मेरा बेटा बहुत भीड़-भाड़ नहीं पसन्द करता । देखो, कैसी शान्ति से खड़ा है ! हाय !

धोबिन : कुछ और खाओगे, ज्ञानपरकाश बेटा ?

(गधा सिर हिलाता है ।)

धोबी : अजी, बहुत कम खुराक है इसकी । सुबह, पाव भर अंगूर । दोपहर को तीन रोटियाँ । शाम को एक गिलास दूध । बस ।

पहला : अजी, चौधरी, बड़े लोग कमखुराकी होते ही हैं ।

तीसरा : और यह तो ज्ञानी भी है ।

चौथा : बिलकुल संत-स्वभाव ।

धोबिन : पहले मैं इसे खिला-पिला लेती हूँ, तभी मैं कुछ करती हूँ ।

धोबी : हाँ, एक बात है भइया, इसे लौकी बहुत पसन्द है ।

पहला : यह तो अपनी-अपनी पसन्द की बात है ।

दूसरा : राजा को घुइयाँ पसन्द है तो कोई क्या करे ? क्यों, मैं कोई गलत बात तो नहीं कह रहा ?

धोबी : अब यही देखिये—ज्ञानपरकाश पलंग पर आराम तो कर सकता है, मगर सोयेगा चारों पाँवों पर खड़े-खड़े ।

धोबिन : जरा-सी आवाज से जग जाता है ।

धोबी : फिर चोरों से मुझे क्या डर ? फरज करो, चोर आये मेरे बेटा को चुराने के लिए.....उनको ऐसा रास्ता बतायेगा कि.....हाँ ।

पहला : अगर चोर इसे दबोचकर ले जायँ ?

धोबी : अजी, मुझे पुकारेगा नहीं । अभी उसी दिन की तो बात है, एक कौआ आकर बैठ गया इसकी पीठ पर । इसने बहुतेरी कोशिश की...पिछाड़ी मारी, कान फड़फड़ाये, रेंका, दौड़ा-भागा, यहाँ

तक कि जमीन पर लेटा, मगर भाई, वह कौआ था कि घनचक्कर। फिर इसने मुझे पुकारा...।

(लोग जाने लगते हैं।)

तीसरा : हाँ, मगर जानवर तो जानवर ही है।

चौथा : वह भी जानवरों में गधा।

धोबिन : हे खबरदार, मेरे ज्ञानपरकाश को जो गधा कहा, हाँ !

(सब पड़ोसी जाते हैं।)

धोबी : अच्छा बेटा, अब तुम भी आराम करो।

धोबिन : किसी चीज की जरूरत हो तो पुकार लेना बेटा, सरमाना नहीं। पास में तो रहते हैं हम लोग।

धोबी : अरे भाई, मैं तो यहीं तुम्हारे पास में पलंग पर सोता हूँ।

(धोबिन जाती है। धोबी वहीं पलंग पर सो जाता है। मंच का प्रकाश धीरे-धीरे मंद होता है। थोड़ी ही देर के बाद दायें-बायें से दो चोर आते हैं।)

गधा : क्या है ? कौन हो तुम लोग ?

(दोनों चोर आपस में कुछ सलाह करके।)

पहला चोर : आपके दर्शनों के लिए आये हैं, महराज !

दूसरा चोर : बड़ा परताप है महराज आपका।

पहला चोर : बड़ा नाम सुन रक्खा है।

दूसरा चोर : आप तो साक्षात् अवतार हैं, प्रभूजी !

पहला चोर : दुनिया भर में ऐसी कौन-सी चीज है, जो आपको सबसे ज्यादा प्रिय है ?

दूसरा चोर : हम आपकी सेवा करना चाहते हैं ?

गधा : जाओ मुझे आराम करने दो। कल सुबह आना।

पहला चोर : हमें बस, उस चीज का नाम बता दीजिये।

दूसरा चोर : फिर उसे लिये हुए कल आपके दर्शन करने आयेंगे।

पहला चोर : कृपाकर बोलिये, महराज !

दूसरा चोर : हम आपके दास हैं, धरमावतार !

पहला चोर : हम आपकी पूजा करेंगे, नाथ !

दूसरा चोर : इसी में हमारा कल्याण है, दयानिधे !

(गधा दोनों को देखता है। दोनों हाथ जोड़े खड़े हैं। गधा हँसता है।)

गधा : मुझे लौकी पसन्द है।

दोनों चोर : जै हो, जै हो महराज !

(दोनों जाते हैं और एक किनारे खड़े होकर स्कीम बनाते हैं। फिर भागते हैं। गधा कान फड़-फड़ाता है। धोबी जगता है।)

धोबी : (आकर) क्या चाहिए, बेटा ?

गधा : एक मक्खी मुझे तंग कर रही है। इसे

उड़ाओ।

धोबी : मैं इसे जान से मारता हूँ। कहाँ है ससुरी ?

(कपड़ा लेकर उड़ाता है। उसे हवा में मारने की कोशिश करता है।)

धोबी : कहाँ जायेगी तू बचकर। यह मारा।...ये मारा। ओह अब भी नहीं मरी।...मारा...मारा। मार दिया, बेटा ! अब आराम से विश्राम करो, बेटा !

(धोबी फिर पलंग पर जाकर सो जाता है। उसकी खर्राहट सुनायी पड़ने लगती है। दोनों चोर किनारे से प्रकट होते हैं। एक के हाथ में लम्बे-से डंडे में बँधी लौकी लटक रही है। वह दूर से ही गधे के मुँह के पास लौकी झुलाता है। गधा लौकी खाने चलता है। चोर लौकी को उसके मुँह के आगे-आगे झुलाता रहता है। इस तरह गधा लौकी के पीछे-पीछे बाहर निकल आता है। दूसरा चोर खुशी से दौड़ा आता है और गधे की पड़ी हुई रस्सी उठाता है।)

दूसरा चोर : (लपेटता हुआ) मार दिया...मार दिया। गधे की चोरी किस तरह मुश्किल काम है, बाबा! रे बाबा ! और जब गधा बुद्धिमान हो, फिर तो उसकी चोरी, आप समझ लीजिये, तलवार की धार पर चलने की तरह है। मेरा साथी गधे को लिये हुए अब उस बाग में निकल गया है। मुझे जल्दी से उसके पास पहुँचना है। हाँ, हाँ, बहुत जल्दी। आधी रात का समय हो रहा है। थोड़ी ही देर में हमें राजा के महल में चोरी करनी है। आप जानते हैं, राजमहल में घुसकर चोरी करना कितना असम्भव काम है! इसीलिए तो हमें इस बुद्धिमान गधे की इस तरह चोरी करनी पड़ी है। हमारे पास इतनी बुद्धि कहाँ है कि राजमहल में चोरी कर सकें ! वही गधा हमें उपाय बतायेगा, फिर हम चोरी करेंगे ठाठ से राजा के यहाँ। हाँ, नहीं तो क्या ? अब मुझे फौरन भागना चाहिए...।

(भागता है। धोबी खर्राटे भर रहा है। प्रकाश बुझता है।)

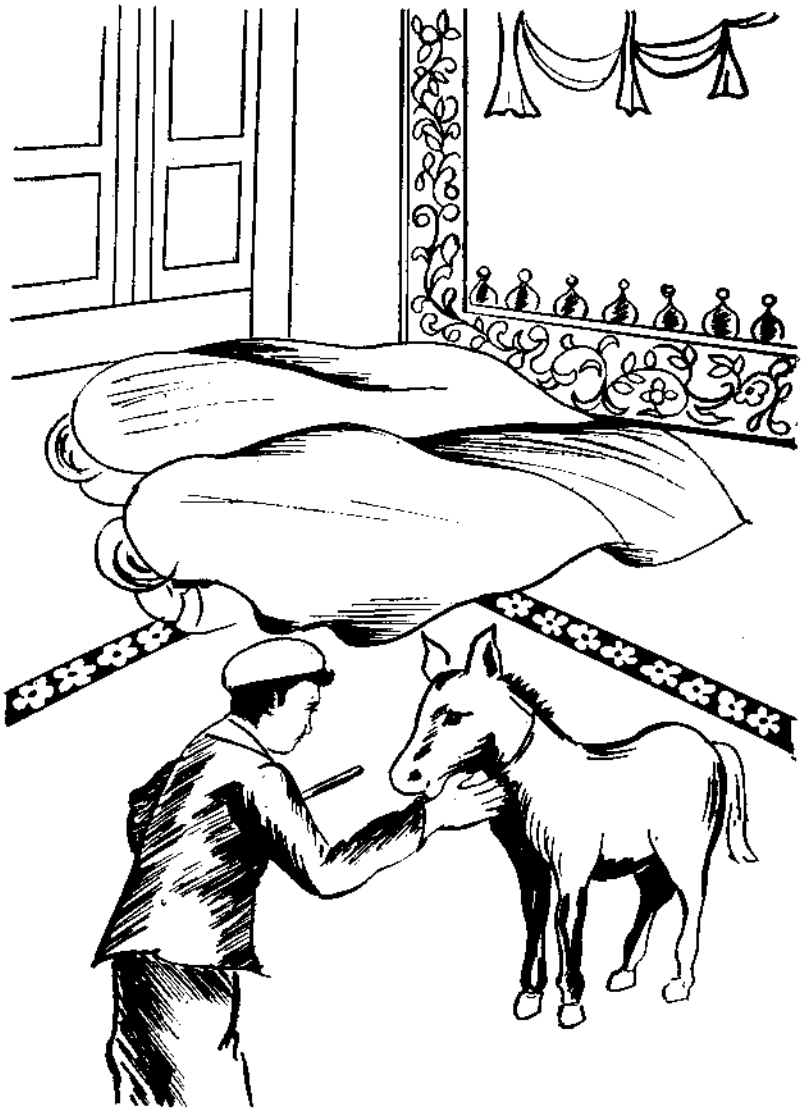

तीसरा दृश्य

(दोनों चोर गधे के संग आते हैं।)

पहला चोर : हम रात भर राजमहल के चारों ओर चक्कर ही काटते रहेंगे क्या ?

दूसरा चोर : घबड़ा नहीं। मौका देख रहा है। झटपट अब बताओ गधेराम, राजमहल में घुसने का फस्ट क्लास उपाय क्या है ?

पहला चोर : यार गधेराम, झट बताओ, वरना रात खिसकती जा रही है।

दूसरा चोर : छेड़ो नहीं...छेड़ो नहीं...ध्यानमग्न है, प्यारे !

(चोर इधर-उधर देख रहे हैं। कभी आपस में सलाह करते हैं। ताक लगाते हैं। फिर गधे का मुँह देखते हैं।)

पहला चोर : अरे बोल, प्यारे !

दूसरा चोर : घूँघट का पट खोल, प्यारे !

(पृष्ठभूमि से सहसा आवाज़ उभरती है—'जागते रहो'। चोर घबड़ा जाते हैं।)

पहला चोर : वह इधर ही आ रहा है सिपाही।

दूसरा चोर : गधेराम बचाओ...वरना जान गयी।

पहला चोर : झट-पट।

दूसरा चोर : फटाफट।

गधा : तुम दोनों यहीं सो जाओ।

(दोनों वहीं सो जाते हैं। कपड़े से सारा शरीर ढँके हुए हैं। सिपाही वहीं आवाज़ देता हुआ आता है।)

सिपाही : (गधे को देखते ही) अरे, यह तो वही गधा है...हाँ हाँ, मैं खूब पहचान रहा हूँ...वही, वही बुद्धिमान गधा ! क्यों भाई, क्या हाल-चाल है ? इधर कैसे आये ? मेरे लायक कोई सेवा ?

(गधे को सहलाने चलता है, वह लात मारता है।)

सिपाही : भाई बोलो...तुम तो बोलते हो, यार ! चलो मेरे घर चलो। अभी राजा की यह नौकरी छोड़कर तेरे साथ तीर्थ-यात्रा के लिए निकल चलूँगा। तू गुरु, मैं चेला। दोनों काटेंगे माल, करेंगे राज। चल बेटा, निकल चल मेरे साथ...उस धोबी के साथ रहने में तेरा क्या लाभ भला ? अरे जो भी हो, सब कहेंगे तुझे 'वही धोबी का गधा।' और राजा के ही यहाँ रहकर तुझे क्या मिलेगा ? अरे भाई, तू बोलता क्यूँ नहीं ? कुछ तो बोल

प्यारे...अच्छा सिर्फ एक बार। तेरे मुखारबिन्द से कुछ सुनने के लिए कितना विकल हूँ !

(गधे को प्यार करने के लिए बढ़ता है। गधा उसे काटने के लिए दौड़ता है। सिपाही लाठी से अपनी रक्षा करता है।)

सिपाही : अरे यार, यह तो मामूली गधा है। खाँमखा इस उल्लू के पट्ठे के चक्कर में फँस गया। धत्तेरे की ! (लाठी तानता है।) चल भाग जा यहाँ से...हट...हट...हट...च्ले...चले। (सहसा) ओहो...धोबी इधर सोये हैं। (लाठी से जगाता है।) कौन लोग ? अबे जागते क्यों नहीं ?... उठो...कौन हो तुम लोग ?

(दोनों जगते हैं। पहला उठ बैठा है, दूसरा पड़ा है।)

सिपाही : बोलते क्यों नहीं ?

पहला चोर : दुहाई धरमावतार की...हम परजा हैं आपकी। धोबी हैं साहब—आपके पैर की जूती।

सिपाही : वह कौन है ?

पहला चोर : यह ?...यह है...मेरा...मेरा भा...भा...पिता... बाप जिसे कहते हैं। यह बहुत बीमार हो गये। तभी हमें यहीं रास्ते में ही सो जाना पड़ा। किसी तरह रात काट कर सुबह अपने रास्ते निकल जायेंगे।

सिपाही : तुम्हारे गधे की सकल बिलकुल, हूबहू उस धोबी के बुद्धिमान गधे से मिलती है।...

(पहला चोर बराबर सिपाही से आँख बचाकर गधे को कुछ न बोलने का इशारा, धमकी, सिफ़ारिश कर रहा है।)

पहला चोर : अजी, मेरी ऐसी किस्मत कहाँ ?

सिपाही : अच्छा सोओ...मगर हें हें हें हें हें !

पहला चोर : कोई बात नहीं...यह लीजिये, आपकी सेवा में... हें हें हे हें !

सिपाही : यह तो बहुत कम है···हें हें हें हें !

पहला चोर : बहुत गरीब हूँ महराज...हें हें हें हें !

सिपाही : अच्छा, अच्छा, आराम करो···हें हें हें हें !

(सिपाही जाता है। पहला चोर उठकर उसे देखता है। दूसरा चोर तेज़ी से उठकर गधे को एक चपेट मारता है।)

दूसरा चोर : अब तो जल्दी बता।

पहला चोर : पिताजी, बड़ी बुद्धिमानी दिखायी है गधेराम ने।

दूसरा चोर : मगर अब तो बोले ये।

(गधा जम्हाई लेता है।)

दूसरा चोर : बोल जल्दी, वरना मुँह में डंडा डाल दूँगा।

गधा : सुनो ध्यान से। सीधे जाओ। दरबान सो गया है। उसके सिरहाने चाभी है।

पहला चोर : अच्छा, हम अन्दर घुस गये। फिर ?

गधा : भीतर जाकर ज़ीने से ऊपर चढ़ो।

दूसरा चोर : चढ़ गये।

गधा : राजा के कमरे के बग़ल में जो कमरा है—उसी में एक काला बक्स है।

पहला चोर : वह कमरा कैसे खुलेगा ?

गधा : उसमें आज ताला लगाना भूल गया है।

दोनों चोर : जियो...जियो...(उसे प्यार करते हैं।) यहीं रहना चुपचाप।

पहला चोर : बिलकुल...हाँ।

दूसरा चोर : दुआ दो, माई-बाप !

(दोनों जाते हैं। गधा इधर-उधर घास चरने लगता है। कुछ ही क्षणों बाद वह दौड़ना शुरू करता है। दोनों चोर दौड़े हुए आते हैं।)

पहला चोर : हाँ हाँ हाँ, यह क्या कर रहा है ?

दूसरा चोर : सब सत्यानाश कर दिया।

पहला चोर : बेअक्ल, इस वक्त कोई इस तरह दौड़ता है ?

दूसरा चोर : बदमाश...लुच्चे, तुझे इसी वक्त दौड़ास लगी, जब हम भीतर घुस चुके थे ?

पहला चोर : तेरी दौड़ाहट से भीतर सिपाही जग गये... मालूम है तूने कित्ता बड़ा नुकसान किया ?

दूसरा चोर : अब बता, कहाँ चोरी करें ?

गधा : सामने सेठ के घर में। सेठ अपने सिरहाने तकिये में नोट भरके सो रहा है।

दोनों चोर : मज़ा आ गया !...मज़ा !

पहला चोर : काम भी बहुत आसान है।

दूसरा चोर : खबरदार, इस वक्त भी कोई ऐसी हरकत न कर बैठना...वरना बिना मारे न छोड़ूंगा। समझ लेना, बेटे !

पहला चोर : नहीं नहीं, ऐसा हर वक्त करेगा क्या ? आओ चलो।

(दोनों दूसरी दिशा में चोरी करने जाते हैं। गधा फिर घास चरना शुरू करता है। थोड़ी देर बाद सहसा तेज़ी से कान फड़-फड़ाने लगता है। दोनों चोर भागे आते हैं। कान पकड़ लेते हैं।)

दूसरा चोर : बोल, यह क्या कर रहा है ?

पहला चोर : खींच लूँ तेरे कान ?

दूसरा चोर : हरामज़ादा !...बदमाश !...तूने इस बार भी सत्यानाश कर दिया। जी चाहता है, तुझे जान से मार दें।

गधा : कान में मक्खी घुसने लगी थी।

पहला चोर : मक्खी घुसने लगी थी। मर क्यों न गया ?

गधा : अच्छा माफ़ करो। अब ऐसा नहीं करूँगा।

दूसरा चोर : तेरा क्या ठिकाना ! गधे की जात, तुझे मैं अब जूतों से ठीक करूँगा।

(मारने चलता है। पहला चोर रोक लेता है।)

गधा : अच्छा...फिर राजमहल में चोरी करने जाओ। अब सब सो रहे हैं।

पहला चोर : अगर फिर कोई हरकत की तो ?

गधा : अब वैसी ग़लती न होगी।

दोनों चोर : खबरदार, बेट्टा ! नहीं तो इस बार जान की खैरियत नहीं।

(दोनों जाते हैं। इस बार गधा चुपचाप अपनी जगह खड़ा रहता है। किन्तु थोड़ी ही देर बाद वह सहसा रेंकना शुरू कर देता है। दोनों चोर भागे हुए आते हैं और उसे मारना शुरू करते हैं। मारते-मारते उसे गिराकर बेहोश कर देते हैं।)

दूसरा चोर : बस...बस, मर गया।

पहला चोर : अभी साँस चल रही है।

दूसरा चोर : बस, अब दम तोड़ रहा है।

पहला चोर : बड़ा बुद्धिमान बनता था !

दूसरा चोर : घुस गयी सारी अकल !

पहला चोर : चलो, अब भाग चलें।

दूसरा चोर : सारी मेहनत बेकार गयी।

पहला चोर : नमकहराम कहीं का !

दूसरा चोर : आखिर गधा, गधा ही होता है।

(दोनों बड़बड़ाते हुए जाते हैं। गधा बेहोश पड़ा है। थोड़ी देर बाद धोबी अपने गधे को ढूंढ़ता हुआ आता है।)

धोबी : (आवाज़ लगा रहा है।) बेटा ज्ञानपरकाश !... ओ ज्ञानपरकाश, कहाँ हो मेरे बेटे !...ज्ञान-परकाश...ओ ज्ञानपरकाश !...

(चारों ओर पुकार लगा रहा है। सिपाही आता है।)

सिपाही : कौन है ? क्यों शोर मचा रहा है ?

धोबी : सरकार, मेरे गधे को चोर उठा ले गये। दुहाई सरकार की !

सिपाही : कब ले गये ?

धोबी : अभी...आज ही रात को। हाय...मैं तो लुट गया। लुट गया।

सिपाही : मैंने इधर उसी तरह का एक गधा देखा है।

धोबी : कहाँ ? कहाँ ? आपको मुँह-माँगा इनाम दूंगा।

सिपाही : अब राजा के हाथ बेच दोगे...और मुझे मुँह-माँगा कमीशन दोगे—यह वायदा करो, हाँ।

धोबी : अरे पहले मेरा पुत्तर तो बताओ, कहाँ है ?

सिपाही : ना...पहले वायदा करो...वरना जाओ अपने रास्ते।

धोबी : अच्छा...मुझे मंजूर है।

सिपाही : आओ मेरे साथ।

(दोनों चलते हैं।)

सिपाही : अरे ! वे दोनों धोबी कहाँ गये ?

धोबी : वह सोया पड़ा है मेरा ज्ञानपरकाश।

(उसका सिर अपने अंक में भर लेता है।)

सिपाही : यही है न ?

धोबी : हाँ हाँ, यही है...यही है !...उठ बेटा...उठ... ! उठता क्यों नहीं ? अरे, तुझे क्या हो गया ?

सिपाही : यह तो बेतरह घायल है।

धोबी : हाय ! हाय !...किसने मारा...किसने मारा मेरे बेटे को ?

(रोने-तड़पने लगता है।)

सिपाही : हैय...चुप रह ! बंद कर रोना...धोना। राजा की नींद खराब हुई तो तेरी खैरियत नहीं।

धोबी : अच्छा...जरा उठाओ तो इसे। उधर से। मैं इधर से।

(दोनों उठाते हैं। गधा उठता है, पर पाँव नहीं रख पाता। ज़मीन पर लुढ़क जाता है। धोबी फिर रोना शुरू करता है।)

सिपाही : चुप रह...चुप होता है कि नहीं ?

धोबी : मैं लुट गया ! मैं लुट गया !

सिपाही : लगता है, वे चोर थे। इसे चुरा कर यहाँ ले आये थे। वे दोनों यहीं सोये पड़े थे।

धोबी : आपने देखा था ? आपने उन्हें पकड़ा क्यों नहीं ?

सिपाही : यह गधा कुछ बोला ही नहीं। मैंने इससे बहुतेरी बातें करने की कोशिश की...मगर यह चुप...बिलकुल चुप रहा। फिर मैंने समझा, यह वह नहीं, कोई मामूली ही गधा है।

धोबी : हाय, यह तो मेरा वही गधा है। वही मेरा ज्ञानपरकाश। हाय रे !

सिपाही : शी...देखो शोर नहीं। चुपचाप ले जाओ इसे।

धोबी : आपका कमीशन ?

सिपाही : अब इसे कौन खरीदेगा ?

धोबी : क्यों ? राजा खरीदेंगे। तुम अपना मुँहमाँगा कमीशन ले लेना।

सिपाही : अब यह किस काम का ? यह तो बोलता तक नहीं।

धोबी : क्यों नहीं ? बोल बेटा ज्ञानपरकाश, क्या हुआ तुझे, बेटा ?

(गधा कराहता है।)

धोबी : देखो, कराह रहा है। कितनी मीठी बोली है इसकी ! बोलो, बेटा !

गधा : मुझे चोरों ने बहुत मारा।

धोबी : ओहो ! समझ गया। चोर इसे खींचते हुए ले

जा रहे होंगे, यह उनके संग जाने को तैयार न हुआ, तभी उन्होंने मारा है।

(रोने लगता है।)

सिपाही : ऐ, चुप रहता है कि नहीं ? खबरदार फिर जो रोया।

धोबी : अच्छा, आप ही इसे खरीद लीजिये।

सिपाही : जा, जा, अब इसे कौन खरीदेगा...दिमाग खराब है ?

धोबी : वाह, वाह ! यह ठीक हो जायेगा। चाहे जितने रुपये लगें। इसकी दवा कराऊँगा...मरहमपट्टी करा ऊँगा। अस्पताल में भर्ती कराऊँगा। क्या समझ रखा है ! जरा उठा तो देना...।

सिपाही : जाओ...जाओ...!

(सिपाही चला जाता है। धोबी गधे को सहारा देकर उठाता है और उसे थामे हुए आगे बढ़ता है। प्रकाश बुझता है।)

चौथा दृश्य

(गधे को लिये हुए, धोबी अपने गले में तासा—या ढोल—लटकाये हुए आता है। उसे बजाता हुआ ऊँचे स्वर में बोली बोलता है।)

धोबी : खरीद लो, खरीद लो ! बुद्धिमान गधा खरीद लो। यह हर सवाल का जवाब बतायेगा। हर तकलीफ का उपाय बतायेगा। सोयी हुई तकदीर जगायेगा। खरीद लो। खरीद लो।

(पड़ोसी आते हैं।)

पहला : इसके सारे बदन पर चोट लगी है।

दूसरा : यह लँगड़ा रहा है।

तीसरा : घायल है घायल।

चौथा : इसे क्यों बेचते हो, चौधरी ?

धोबी : इसी ने कहा—'मुझे बेच दो।'

पहला : अरे क्यों बातें बनाते हो? यह बिलकुल बेकार है।

धोबी : चुप रहो, जलते हो मुझसे—यही न ?

दूसरा : हाँ, हाँ, मैंने अपना सारा आँगन खोद डाला, एक पैसा भी न मिला।

तीसरा : सच, कुछ नहीं मिला ?

दूसरा : एक मिट्टी का खाली घड़ा मिला।

धोबी : तुम्हारी किस्मत ही खराब हो, तो ज्ञानपरकाश का क्या दोष ? धन इस बीच गायब हो गया।

चौथा : हाँ, यह बात सही है। ऐसा होता है—लछिमी खिसक जाती हैं।

पहला : क्या दाम लगाया है, चौधरी ?

धोबी : पाँच बीघे जमीन, या दस हजार रुपये।

(सभी हँसते हैं और मज़ाक करते हैं।)

दूसरा : खुद तो मारे गये चोरों से ज्ञानपरकाश जी।

तीसरा : चोरों ने मरा हुआ जानकर छोडा।

पहला : जब चोर इसे छोड़ गये, फिर समझो यह कितना बेकार है !

धोबी : हें-हें, चुप रहो। मेरे ज्ञानपरकाश की बेइज्जती करने का तुम लोगों को कोई अधिकार नहीं। जाओ, जाओ, अपना रास्ता लो।

तीसरा : किसी काम का होता तो चोर भला इसे छोड़ते ?

चौथा : हाँ, हाँ, वे ही इसे कहीं न बेच लेते ?

पहला : बड़ा आया ज्ञानपरकाश !

दूसरा : न करनी, न करतूत।

तीसरा : यह तो अब कपड़ा लादने-ढोने लायक भी नहीं।

चौथा : जाओ, इसे राजा के हाथ बेचो।

(चारों हँसते हैं। धोबी ढोल बजाता और बोली बोलता हुआ चला जाता है। पड़ोसी चले जाते हैं। धोबी घूमता-घामता मंच पर फिर आता है। गधा आगे चल नहीं पाता। धोबी उसे खींचता है, मारता है, झिड़कता है। गधा सहसा रेंकने लगता है। धोबी उसका मुँह पकड़ लेता है।)

धोबी : तेरा मुँह तोड़ दूँगा...अभागा कहीं का ! इससे तो अच्छा था, तुझे बुद्धि न मिलती। तू उसी तरह रहता।

(धोबिन आती है।)

धोबिन : हाय, हाय ! क्यों मारते हो ? उसका मुँह तोड़ दोगे क्या ? (छुड़ाती है।) इसका क्या कसूर ?

धोबी : इसे कोई नहीं खरीदता।

धोबिन : न खरीदे। यह मेरे दरवज्जे पर पड़ा रहेगा।

धोबी : हाँ, हाँ, मैं इसे बैठे-बैठे खिलाऊँगा। इसने मुझे कहीं का न रक्खा। मेरा सारा काम चौपट हो हो गया।

धोबिन : इत्ता रुपये कमाये तो बुरा नहीं लगा ?

धोबी : मगर अब तो नहीं कमा रहा।

धोबिन : तुम हाथ पर हाथ धर के बैठे रहो, तो मेरे ज्ञानू बेटे का क्या दोष ? हाय, हाय, कितना

भूखा-प्यासा है बेचारा ! आ बेटे, आ मेरे साथ। हाय, देखो तो भला ! राम राम...!

(गधे को लेकर धोबिन जाती है। धोबी उदास बैठ जाता है। थोड़ी देर बाद वही दोनों चोर आते हैं।)

दोनों : राम-राम ! चौधरी का बात है ?

धोबी : का बताएँ भइया, चोरों ने मेरे ज्ञानपरकाश को कहीं का न रक्खा।

पहला चोर : अरे ! चोर !...कहाँ ? कैसे ?

दूसरा चोर : यह तो बड़े अफसोस की बात है।

धोबी : का बतावें भइया, चोर उसे खींचे ले जा रहे थे। वह जा नहीं रहा था...इस पर चोरों ने उसे बेतरह मारा।

दोनों चोर : चा...चा...चा...राम राम राम !

धोबी : कैसा बुरा जमाना आ गया है !

पहला चोर : सुना है, गधे को बेच रहे हो ?

दूसरा चोर : गधा नहीं...ज्ञानपरकाश।

धोबी : हाँ, भइया बेच रहा हूँ।

पहला चोर : क्या दाम लगाया है ?

धोबी : पाँच हजार।

(दोनों परस्पर सलाह करते हैं।)

धोबी : (उठता है।) तुम्हीं बताओ, क्या दाम लगाओगे ? हाँ, हाँ, बताओ, बोलो।

पहला चोर : क्या दाम लगायें ? तुम्हारा ज्ञानपरकाश किसी काम का नहीं है।

दूसरा चोर : मतलब अच्छा है, मगर बहुत अच्छा नहीं।

धोबी : क्या मतलब ? तुम्हें क्या पता मेरे ज्ञानपरकाश के बारे में ? कौन हो तुम लोग ? कहाँ के रहने वाले हो ?

पहला चोर : नदी के उस पार रहते हैं।

दूसरा चोर : हम व्यापारी हैं, चौधरी ?

पहला चोर : हमें पता चला, तुम्हारे पास ऐसा-ऐसा गधा है।

धोबी : किससे पता चला ?

पहला चोर : दो आदमी थे...आज सुबह ही की तो बात है—उन्होंने ही हमें बताया।

धोबी : (अपने आप) जरूर वही चोर थे। उनका पता चल जाय तो उनकी हड्डी-पसली तोड़कर मिट्टी में मिला दूँ।

दूसरा चोर : वह कह रहे थे, गधे में ज्ञान तो है...वह बोलता भी है, मगर उसके सारे स्वभाव, उसकी प्रकृति गधे की ही है।

धोबी : हाँ, हाँ, तो इसमें बुराई क्या है ?

पहला चोर : फिर उसकी अकल से क्या फायदा ?

धोबी : क्यों नहीं ?

दूसरा चोर : मसलन, गधे ने कोई अकल बतायी। उसके हिसाब से हम काम करने चले। तभी गधा अपनी आदत से मजबूर रेंकने लगा...!

पहला चोर : मतलब...हमने एक बात कही...बात।

धोबी : हूँ...मैं कुछ समझ रहा हूँ।

दूसरा चोर : हम तो, चौधरी, व्यापारी हैं, हमसे किसी का क्या लेना-देना ?

धोबी : हुँ।

पहला चोर : तो सही दाम बता दो, चौधरी !

दूसरा चोर : एक दाम।

धोबी : तुम्हीं बोल दो। लगा दो दाम, जो सोचते हो।

पहला चोर : पचास रुपये।

दूसरा चोर : यह क्या बोल दिया ? उल्लू, यह पचास के लायक है ?

पहला चोर : अब तो मुँह से निकल गया, भाई !

धोबी : जाओ...जाओ, अपना रास्ता देखो, मैं सब समझता हूँ।

पहला चोर : अरे, खामखा फिर चोर उठा ले जायेगा...।

धोबी : क्या कहा ? जाते कहाँ हो ?

(दौड़ा हुआ गधा आता है। संग धोबिन भी।)

गधा : चोर...चोर ..यही हैं चोर।

('चोर' 'चोर' करके सब उन दोनों का पीछा करते हैं। दोनों चोर पूरे मंच पर, दायें-बायें, आगे-पीछे भागते, छिपते हैं। गधा रेंकता है। मारे शोर के मंच का

वातावरण भर जाता है। गधे के रेंकने से धोबी-धोबिन उसके पास आते हैं और चोर मौक़ा पाकर निकल जाते हैं।)

धोबी : हाय, देखो चोर निकल गये !

धोबिन : (मारती हुई) तू क्यों रेंका रे ?

धोबी : (मारता हुआ) नमकहराम ! पाजी...गधा... सूअर !

धोबिन : यह बिलकुल दो कौड़ी का है।

धोबी : मैं क्या कहता था—इसकी आदत अच्छी नहीं।

धोबिन : मुझे क्या पता—यह ऐसा है।

धोबी : इसी की वजह से चोर भाग गये। वे वही चोर थे...वही चोर।

धोबिन : इसे कसाई के हाथ बेच दो।

धोबी : इसे कसाई भी न खरीदेगा।

धोबिन : फिर छोड़ दो इसे। मरे कहीं जाकर।

धोबी : सत्यानासी !

धोबिन : एक काम करो। इसे एक बार और ले जाओ बेचने। जो कोई कुछ दे दे—दे दो उसे।

धोबी : सोचता हूँ, राजा के पास ले जाऊँ। शायद वह इसे अपने चिड़ियाघर के लिए ले लें।

धोबिन : जाओ, कोशिश कर देखो।

धोबी : और काम न बना तो ?

धोबिन : फिर इसे दो लात मार कर कहीं छोड़ देना।

(धोबिन जाती है। धोबी फिर वही ढोल बजाता हुआ चलता है। वही बोली बोलता है। मंच के कई चक्कर लगाता है। राजा का सिपाही निकलता है।)

सिपाही : क्या शोर मचा रहा है ?

धोबी : राजा को बोलो, मैं गधा बेचने आया हूँ।

सिपाही : यह बेकार गधा अब राजा के सिर मढ़ने आया है !

धोबी : राजा के चिड़ियाघर के लिए अच्छा रहेगा।

सिपाही : जा, जा। भाग जा।

धोबी : दाम हम दोनों आधा-आधा बाँट लेंगे।

सिपाही : राजा को सब पता है। उन्हें अब तुम्हारे गधे में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं।

धोबी : बिलकुल सस्ते में दे दूंगा।

सिपाही : चाहे मुफ्त में क्यों न दे दे। राजा को नहीं चाहिए यह गधा।

धोबी : पर राजा को बुद्धिमान गधे तो बहुत पसन्द थे।

सिपाही : वैसे गधे बहुतेरे हैं राज-दरबार में।

धोबी : तो एक और सही।

सिपाही : पर यह तो रेंकता है।

धोबी : गधा जो है।

सिपाही : नहीं, नहीं, ऐसे गधों का कोई भरोसा नहीं। इनसे बड़े-बड़े उत्पात होते हैं।

धोबी : सरकार, यह राजनीति बतायेगा।

सिपाही : चुप रह।

धोबी : प्रजा पर राज करने के उपाय बतायेगा।

सिपाही : अपना सिर बतायेगा ?

धोबी : तोहफे के तौर पर राजा इसे किसी और राजा को भेंट कर सकते हैं।

सिपाही : मत कर बकबक।

धोबी : हाथ जोड़ता हूँ। पाँव पड़ता हूँ। इसे किसी तरह भी ले लो। चलो, तुम्हीं ले लो, सरकार !

सिपाही : मुझे इतना उल्लू समझता है ?

धोबी : दुहाई, भाई-बाप !

सिपाही : जा, चला जा यहाँ से। फिर कभी इधर मत आना, खबरदार ! बड़ा आया व्यापारी बनकर !

(सिपाही जाता है। धोबी फिर ढोल बजाते हुए मंच पर चक्कर काटता है।)

धोबी : ले लो...खरीद लो...जो चाहो दे दो। (दर्शकों से) यह दिलों का राज़ बतायेगा। प्रेमपत्र का मसौदा बनवायेगा। एक जगह की बात दूसरी जगह पहुँचायेगा। इसकी खुराक महज घास है—जो चारों ओर आसपास है। यह देगा... केवल देगा...माँगेगा कुछ नहीं। यह सब कुछ बतायेगा और सबके राज़ अपने दिलों में रखेगा। यह बेनजीर है। यह सबकी हरता पीर है।

यह खुशमिजाज है, बच्चे-बूढ़ों का मुमताज है। चलो खरीद लो। दे दिया मुफ्त में। लुटा दिया मुफ्त में। कौन ? कोई ?...कोई नहीं ? कोई नहीं। (रुककर) अब क्या करूँ ? इसे दो लात मार कर छोड़ दूँ ? हाय, पर इसका क्या कसूर ? सारा दोष तो मेरे भाग्य का है। जा बेटा...जा...विदा !...तुझे छोड़ता हूँ तेरे करम पर और मैं जाता हूँ अपने धरम पर।...काश तू मेरे कपड़े ही ढो सकता—घर से घाट तक, घाट से घर तक। हाय रे तेरी अक्ल...!

(धोबी उसे छोड़ चला जाता है। गधा उदास खड़ा है। वही दोनों आते हैं। डंडे में लौकी लटकाये। गधा दूसरी ओर मुँह फेर लेता है।)

पहला चोर : वाह, बेट्टा ! अब लौकी नापसन्द ?

दूसरा चोर : अब तो तू किसी का नहीं। अब तेरे मालिक हम हैं।

पहला चोर : आ बेटा...आ...दुख मत कर...।

दूसरा चोर : सब किस्मत के चक्कर हैं, भाई !

(दोनों हाथ बढ़ाते हैं। गधा उन पर आक्रमण करता है—लात मारता है, काटता है। दोनों भागते हैं।)

पहला चोर : यह हमसे नाराज है।

दूसरा चोर : इसे ले चलो ज़बरदस्ती...रस्सी से बाँध लो।

(रस्सी से बाँधना चाहते हैं। गधा नहीं फँसता। दोनों लाठियों से मारना चाहते हैं। तभी कुछ बच्चे दौड़े आते हैं।)

बच्चे : क्यों मारते हो ? क्यों मारते हो ? क्यों ?

पहला चोर : हमारा गधा है—हम जो चाहें करें।

बच्चे : तुम चोर हो। तुम्हारा गधा कैसा ?...चोर...चोर चोर...!

(दोनों भागते हैं। बच्चे गधे को प्यार करते हैं।)

पहला बच्चा : आओ, इसे मैदान में ले चलें।

दूसरा बच्चा : हाँ, यह कितना भूखा है !

तीसरा बच्चा : इसकी ऐसी हालत क्यों हुई ?

(बच्चों के संग गधा जाता है। प्रकाश बुझता है।)

पाँचवाँ दृश्य

(मंच पर बच्चों से घिरा हुआ गधा।)

बच्चा १ : अच्छा, एक गाना और।

बच्चा २ : सुनाओ न।

बच्चा ३ : अच्छा, एक कहानी सुनाओ।

सभी बच्चे : हाँ, हाँ, एक कहानी।

गधा : अपनी कहानी सुनाऊँ ?

कई बच्चे : नहीं, नहीं, तुम्हारी कहानी हम सब जानते हैं।

गधा : कैसे ?

कई बच्चे : सब जानते हैं।

गधा : अच्छा...धोबी ने भी मुझे त्याग दिया—ऐसा क्यों ?

बच्चा १ : क्योंकि तुम उसके किसी काम के नहीं रहे।

गधा : क्यों नहीं रहा ?

कई बच्चे : यह तो तुम्हीं बता सकते हो।

गधा : सच, मैं यही नहीं जानता।

कई बच्चे : नहीं, नहीं, हमें कहानी सुनाओ।

गधा : अच्छा। एक था भालू।

कई बच्चे : (हँसते हैं।) भालू !

गधा : एक था बंदर।

कई बच्चे : भालू और बंदर ! (हँसते हैं।)

गधा : भालू और बन्दर में बड़ी दोस्ती थी। एक बार ऐसा हुआ कि...।

(कपड़े का गट्ठर लादे हुए धोबी आता है।)

धोबी : अरे, यह तो मेरा वही गधा है।

कई बच्चे : अब यह हमारा है।

धोबी : पूछो गधे से—वह किसका है ?

कई बच्चे : तुम किसके हो ?

(गधा धोबी की ओर हाथ उठाता है।)

धोबी : मैं जानता था...मेरा गधा कित्ता ईमानदार है !

बच्चा १ : तब इसे इस तरह क्यों छोड़ा ?

धोबी : कहो न, यह गट्ठर पीठ पर ढोकर घाट तक पहुँचा दे। कहो। देखो, क्या कहता है।

(गधा बच्चे के कान में कुछ कहता है।)

बच्चा २ : यह कहता है—'मुझसे जो रुपये कमाये हैं, उसी से एक साइकिल खरीद लो, उसी पर कपड़े लाद कर ले जाया करो।'

धोबी : अब सुन लिया ना ? यही है इसकी अकल !

बच्चा ३ : सही तो कहता है—जब मशीन की सवारी है

तो जीव को क्यों कष्ट दिया जाय ?

धोबी : मैं जीव नहीं हूँ क्या ?

(गधा फिर बच्चे के कान में कुछ कहता है।)

बच्चा ४ : तुम लोग कंजूस हो,...मतलबी हो और स्वार्थी हो।

धोबी : हाँ, हाँ, मुझे पता है—वही ज्ञानपरकाश तुम्हें पट्टी पढ़ा रहा है। जबसे इसे बुद्धि मिली, यह खुद काहिल हो गया। बदमाशी और कामचोरी इसकी आदत हो गयी। तभी तो यह दो कौड़ी का भी महँगा हो गया।

(धोबी बड़बड़ाता हुआ चला जाता है।)

सभी बच्चे : अच्छा, अब चलो, कहानी सुनाओ।

गधा : जाओ, अपनी किताबें लाओ, मैं उसी में से कहानी सुनाऊँगा।

बच्चा २ : हमें किताब की कहानी नहीं चाहिए।

गधा : अच्छा, अपनी किताबें लाओ।

सभी बच्चे : नहीं नहीं, हम किताब नहीं लायेंगे।

गधा : तब मैं भी कहानी नहीं सुनाऊँगा।

बच्चा ३ : ऐह ! यह गधा बड़ा बदमाश है ! बहाने बना रहा है।

बच्चा ४ : यह कामचोर है।

गधा : जैसे तुम लोग पढ़ाईचोर हो।

बच्चा १ : क्या कहा ? खबरदार। ठीक नहीं होगा। सारे बच्चे मिलकर तुम्हारा भरता बना डालेंगे।

(गधा हँसता है।)

बच्चा ५ : हँसता है ?...चलो इसके कान पकड़ लो। पकड़ लो इसकी पूँछ। पकड़ लो। पकड़ लो।

(बच्चे पकड़ते हैं। वह भागता है। दुलत्ती झाड़ता है। कई बच्चे चोट खाकर गिरते हैं।)

कई बच्चे : मारो...मारो इसे...मारो।

(बच्चे उसे पत्थर मारने लगते हैं।)

बच्चा ६ : (रोकता है।) नहीं नहीं। क्यों मारते हो ?... यह निर्दोष है...बेकसूर है। मत मारो...रुको... रुको।

(बच्चे नहीं सुनते। मारते रहते हैं। गधा बाहर निकल जाता है। बच्चे उसे ढूँढ़ते हैं।)

बच्चा १ : भाग गया।

बच्चा २ : गायब हो गया पट्ठा।

बच्चा ३ : कहीं छिप गया।

कई बच्चे : (छठे बच्चें को) इसे देखो...देखो।

(सब बच्चे हँसते हैं। चले जाते हैं। मंच पर अकेला वही छठा बच्चा रहता है खड़ा हुआ। गधा

आता है।)

बच्चा ६ : हमने भी तुम्हारा अपमान किया, हमें क्षमा करो।

(गधा दुखी है—चुप है।)

बच्चा ६ : कहाँ जा रहे हो ?

(गधा बिना कुछ बोले चुपचाप चला जा रहा है। बच्चा चला जाता है। थोड़ी देर बाद वही दोनों चोर आते हैं। दोनों हँसते हैं। गधे को छेड़ते हैं। अपमान करते हैं।)

पहला चोर : ओ बेट्टा ज्ञानपरकाश ! (डंडे से छेड़ना) अंगूर खाओगे ? (हँसना) ओ गधे का लौंडा...बोलता क्यों नहीं बे ?

दूसरा चोर : अबे चल, मेरा पैर छू। अबे, छूता है कि नहीं ? (डंडे से) ओ बे !

(गधा पैर छूता है।)

पहला चोर : मेरा पैर भी छू। चल सलाम कर...। माथा टेक कर, बे ! चलता है ?

(गधा माथा टेकता है। दोनों हँसते हैं।)

दूसरा चोर : लौकी खायेगा ?

पहला चोर : इसे जूते खिलाओ।

दूसरा चोर : इसके गले में जूतों की माला पहनाओ।

(गले में जूते लटकाते हैं)

पहला चोर : अब असली बुद्धिमान गधा है।

(हँसते हैं।)

दूसरा चोर : इसे ताता थइया की नाच नचाओ।

पहला चोर : चल बे, नाच ताता थइया !

दूसरा चोर : नाचता है कि तेरी हड्डी तोड़ी जाय ?

(उसे मारते हैं। वह नाचने की कोशिश करता है। दोनों हँसते हैं।)

पहला चोर : वाह बेटा, वाह !

दूसरा चोर : बता, मेरी शादी कब होगी ?

पहला चोर : मेरी कब होगी ?

(गधा सिर हिलाता है।)

पहला चोर : कहता है—नहीं होगी।

दूसरा चोर : क्यों बे ? क्यों नहीं होगी ?

पहला चोर : इसके पिछले पैरों में रस्सी बाँधकर इसी पेड़ से बाँध दो।

दूसरा चोर : चलो...मज़ा आ जायेगा।

(उसके दोनों पैरों में रस्सी बाँध कर पेड़ से बाँध देते हैं। उसे छेड़ते हैं। वह छटपटाता है। दोनों चोर हँसते हुए चले जाते हैं। पड़ोसी आते हैं।)

पहला : अरे, देखो...यह बँधा है।

दूसरा : छोड़ो, दो कौड़ी का है।

तीसरा : कित्ती बुरी हालत है बेचारे की !

चौथा : जैसी करनी, वैसी भरनी।

पहला : बेचारा कितना भूखा-प्यासा है !

दूसरा : छुड़ा दो गरीब हो। जूते भी उतार फेंकों। च... चा...चा !

(पहला उसे मुक्त करता है।)

चौथा : ले, मेरा बोझ अपनी पीठ पर रख।

गधा : (सिर हिलाता है।)

दूसरा : अरे बुद्धिमान कहीं बोझ ढोता है ?

तीसरा : हाँ, वह तो दूसरों से काम लेता है।

दूसरा : लेकिन है तो गधा ही न, चाहे जितना बुद्धिमान क्यों न हो ?

(सब हँसते हैं।)

पहला : क्यों भाई, अब तेरा क्या कार्यक्रम है ?

दूसरा : बस, जंगल में घास चरेगा और लोगों के जूते और मार खायेगा।

(हँसते हैं।)

तीसरा : अब इसे कोई घास नहीं डालता।

चौथा : भाई चलो, अपने रास्ते चलें। सब भाग्य का फेर है।

(सब जाते हैं। गधा खड़ा है। थोड़ी देर बाद वह भी चलता है। चलते-चलते जंगल में फिर उसी पेड़ के पास आता है। रेंकना

शुरू करता है। देवता प्रकट होता है।)

देवता : अरे, तेरी यह हालत ? मुझे पता है, तुझ पर क्या-क्या बीती।

गधा : इसमें मेरा क्या कसूर ?

देवता : (हँसता है।)

गधा : मैंने ऐसा क्या किया ?

देवता : बुद्धि का वरदान पाकर तू ऐसे भागा कि हाथ ही न लगा। मैं तुझे पुकारता ही रह गया।

गधा : और क्या करता ?

देवता : अरे, खाली बुद्धि से क्या होगा ? स्वभाव, प्रकृति और कर्म में भी परिवर्तन होना चाहिए।

गधा : मैं समझा नहीं।

देवता : देख भाई, तू हो गया बुद्धिमान, पर तेरा स्वभाव तेरी आदतें तो रहीं तेरे गधे ही वाली। फिर बुद्धि और भाव में परस्पर विरोध खड़ा हो गया और तेरा इतना पतन हुआ।

गधा : बड़े-बड़े कष्ट, बड़े अपमान सहे, महाराज !

देवता : मुझे पता है।

गधा : मैं दो कौड़ी का भी न रहा।

देवता : सही है।

गधा : मेरा सभी ने तिरस्कार किया।

देवता : चा...चा...चा...चा !

गधा : तो एक विनती है, महाराज !

देवता : बोलो !

गधा : अपना वरदान वापस ले लो।

देवता : अरे...ऐसा क्यों कहता है ? जा, मैं अब तेरे भाव, स्वभाव को भी तेरी बुद्धि के अनुसार बदल देता हूँ। तू इस दुनिया में राज करेगा... सबका प्रिय पात्र होगा।

गधा : नहीं...नहीं महाराज, नहीं।

देवता : यह क्या कहता है ?

गधा : अकेले मुझे ही बदलकर क्या करेंगे ? जब दुनिया के लोगों का भाव-स्वभाव वही रहेगा ?

देवता : (चुप है।)

गधा : मुझे तो प्रभू, वही गधा बना दीजिये, जैसे मैं पहले था।

देवता : सच ?

गधा : हाँ, बिलकुल सच। मुझे और कुछ नहीं चाहिए।

(देवता गधे पर पानी छिड़ककर चला जाता है। गधा इधर-उधर घूमने लगता है। गट्ठर लिये धोबी आता है। उसे देखता है।)

धोबी : अरे...यह गधा किसका है ?...ज़रा इस पर गट्ठर रख कर तो देखूं !

(गट्ठर रखवा लेता है गधा।)

धोबी : (प्रसन्न) अरे...यह तो वही मेरा गधा है...पुराना वाला...वही पहले का !...वह ज्ञानप्रकाश कहाँ

गया ?...कहीं देवता ने इससे बुद्धि वापस तो नहीं ले ली !...क्यों रे ? अरे...अब तो यह बोलता ही नहीं ।...सुनता है रे ?...अरे, अब यह कुछ सुनता ही नहीं ।...कोई बात नहीं...अपना गधा तो वापस मिल गया ।

(उसे लेकर चलता है । रास्ते में गा पड़ता है ।)

निबिया के पेड़वा बड़ा निक लागे, बड़ा निक लागे,
जब घनबौरी होय,
हाय राम जब घनबौरी होय...
धिन ताड़ें नाने नाने नाने
धिन ताड़ें नाने नाने नाने नाने ।

(बच्चे आते हैं । देखते रह जाते हैं । वह वही गाता हुआ चल रहा है । दूर से दोनों चोर देखते हैं । पड़ौसी देखते हैं । अन्त में धोबिन आती है । वह भी खुशी से धोबी के स्वर में स्वर मिलाकर गाने लगती है ।)

(पर्दा गिरता है ।)